अध्याय-प्रथम
शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना

1.2 भूगोल

1.3 भूगोल विषय की शाखाएँ

1.4 भूगोल शिक्षण की विधियाँ

1.5 मानचित्र कला

1.6 मानचित्र के प्रकार

1.7 मानचित्र की उपयोगिता,

1.8 भूगोल में मानचित्र का स्थान,

1.9 मानचित्र की भाषा

1.10 मानचित्र शिक्षण के उद्देश्य

1.11 अध्ययन का कथन

1.12 अध्ययन की आवश्यकता

1.13 अध्ययन के उद्देश्य

1.14 अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1.15 चरों की व्यावहारिक व्याख्या

1.16 अध्ययन की सीमाएँ

अध्याय –प्रथम

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना–

वर्तमान में शिक्षा की स्थिति को देखने पर इसमें क्रांति की आवश्यकता दृष्टिगोचर होती है। सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत बच्चों का नामांकन तथा अपव्यय रोधन के अतिरिक्त महत्वपूर्ण उद्देश्य गुणात्मक शिक्षा प्रदान करना भी हैं।

इसके लिए प्रत्येक विषय में विद्यार्थियों के शिक्षण की उद्देश्यों की पूर्ति हेतु नए उपागमों की खोज करना तथा विद्यार्थियों के हित में शोध करना मूलभूत आवश्यकता बन गई है।

शिक्षक का स्वरूप शीघ्र गति से बदल रहा हैं, शिक्षक का कार्य केवल विद्यार्थियों को कक्षा में शिक्षण प्रदान करना ही नहीं अपितु उनके विषय के विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति करना भी हैं। अतः इसके लिए शिक्षक को निरंतर कार्यरत् रहना पड़ेगा।

भारत देश में वर्तमान समय पर शिक्षा तथा शिक्षा के सर्वांगिण विकास पर बल दिया जा रहा हैं। विद्यार्थी किस विधि द्वारा विषय–बिन्दु शीघ्र ग्रहण करता है। प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों में विषय उद्देश्य की पूर्ति हो रही हैं या नहीं, यह सामाजिक अध्ययन के उद्देश्यों में बताया है। सामाजिक अध्ययन में निम्न विषयो का अन्तर्भाव होता है–

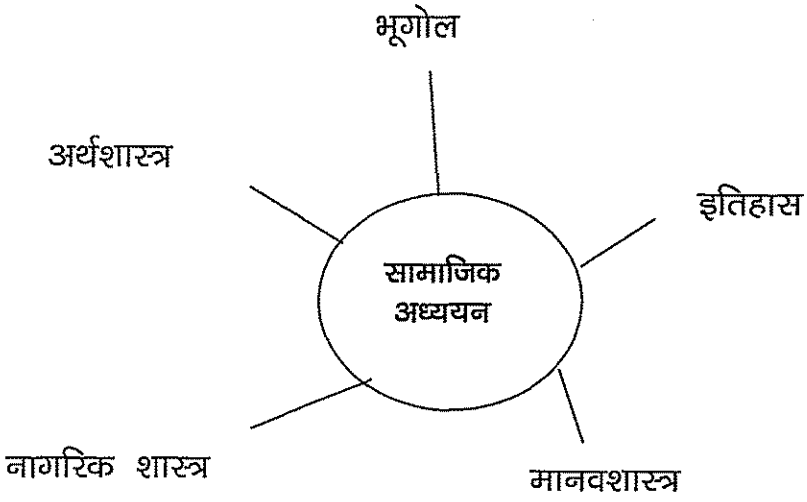

भूगोल–

भूगोल याने पृथ्वी का वर्णन होता है अथवा पृथ्वी का अभ्यास होता हैं। हमारी पृथ्वी सभी जीवों का एक संसार है। भूगोल एक शास्त्र है, इसमें बहुत परिवर्तन हो गये और वर्णन, सूक्ष्म निरीक्षण, प्रयोग परीक्षण, वर्गीकरण, विश्लेषण, अनुसंधान इस अवस्था से तथा विधियों से भूगोल में जो घटनाएँ है उसको शास्त्रीय स्वरूप प्राप्त हुआ है।

इतिहास–

इतिहास में स्थान एवं समय के द्वारा ऐसे ढ़ॉचें का निर्माण किया जाता है, जिसमें घटनाएं घटित होती हैं। यह प्रत्येक स्थान पर मानवीय संबंधो को निर्धारित करने में पारस्परिक निर्भरता की भूमिका अदा करती है। यह स्वयं की पुनरावृत्ति नहीं करती वरन् अतीत की घटनाएं वर्तमान की घटनाओं को प्रभावित कर सकती हैं।

नागरिक शास्त्र–

इस विषय में नागरिक के अधिकार, कर्तव्य तथा अपने राष्ट्र व समाज के निवास करने के मापदण्ड के विद्यार्थियों के अध्ययन से गुणों का विकास करने हेतु शिक्षण किया जाता है।

" नागरिक शास्त्र मानवज्ञान की वह शाखा है जो नागरिकों से संबंधित विषयों (सामाजिक, बौद्धिक, आर्थिक, राजनीति तथा धार्मिक) का अध्ययन करती हैं। इसके साथ ही साथ वह नागरिक के अतीत, वर्तमान, भविष्य, स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पक्षों का भी विश्लेषण करती है।"

–डॉ. ई.एम. व्हाईट

अर्थशास्त्र–

अर्थशास्त्र मानव के लिए वस्तु के उत्पादन, वितरण, विनियम का ज्ञान की शाखा हैं। जो श्रम साधन, पूँजी तथा ज्ञान महत्वपूर्ण कारक का विस्तृत ज्ञान क्षेत्र हैं।

मानवशास्त्र–

मानवशास्त्र आदिकालीन लोगों के विश्वासों, परम्पराओं तथा रहन–सहन के ढंगों का आज के तात्कालीन वातावरण की परिस्थितियों का घनिष्ठतम् रूप से संबंधित अध्ययन हैं।

" Anthropology is the Scientific study of the physical, social and cultural development and behaviour of human beings since their appearance on earth"

- Jacobs & Stern

विभिन्न आयोग, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा, व अन्य सामाजिक अध्ययन के परिषदों और कार्यक्रमों से सामाजिक अध्ययन के शिक्षण के लिए उद्देश्य बनाए गए तथा समयानुसार परिवर्तन हुए जो कि संक्षिप्त में प्रस्तुत किया जा रहा हैं।

कोठारी कमीशन (1964-66) -

में सामाजिक अध्ययन पढ़ाने का उद्देश्य छात्र को पर्यावरण का ज्ञान मानव संबंधो को समझने की शक्ति और कुछ अभिवृत्तियों तथा मूल्यों को जो कि लोगों राज्य, राष्ट्र और विश्व के मामले में बुद्धिमत्तापूर्वक भाग लेने के लिए अपरिहार्य हैं। सामाजिक अध्ययन, पाठ्यचर्या का संगठन, इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र और अर्थशास्त्र द्वारा प्राप्त ज्ञान और कौशल को एक साथ रखने हेतु प्रदान किया गया हैं।

सामाजिक अध्ययन के निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किए गये हैं-

- एक विश्व की नई अवधारणा की ओर आकर्षित किया गया था।
- जिन देशों का अध्ययन कराया जा रहा हो उनकी सामाजिक और राष्ट्रीय एकता पर बल दिया जाए।
- राष्ट्रीय सहयोग और शान्ति की रक्षा में विशेष बल दिया जाए।
- पाठ्यक्रम के माध्यम से दया, सहकारिता, समूह भावना, सहयोग, नेतृत्व, साहस, ईमानदारी, सहयोग, उत्तरदायित्व आदि वांछित सामाजिक गुण विद्यार्थियों में उत्पन्न हो सकें।
- धर्म निरपेक्षता, समाजवाद, के सिद्धांत स्पष्ट होने चाहिए।

शिक्षा आयोग (1964-66) के प्रतिवेदन के शब्द में कह सकते है-

"सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य छात्रों को उनके वातावरण संबंधी ज्ञान प्राप्त करने, मानवीय संबंधों की समझ और ऐसे अभिमत तथा मूल्यों में सहायक होने से है जो समुदाय, राज्य, राष्ट्र तथा विश्व के मामलों में विवेक पूर्ण ढ़ंग से भाग लेने के लिए उपयोगी हैं। भारत में अच्छी नागरिकता तथा भावात्मक एकीकरण

की स्थापना के लिए सामाजिक अध्ययन का प्रभावी कार्यक्रम अनिवार्य हैं।''

एन.पी.ई. (1986) के अनुसार सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य–

एन.पी.ई. 1986 में भी बनाये गये समान केन्द्रित घटक को प्रतिपादित करने के लिए मुख्यतः सामाजिक अध्ययन की जिम्मेंदारी हैं। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास संवैधानिक दायित्व, राष्ट्रीय पहचान के पोषण के लिए आवश्यक विषय वस्तु, भारत की सामान्य सांस्कृतिक विरासत, समतावाद, लोकतंत्र और पंथ निरपेक्षता, स्त्री–पुरूष समानता, पर्यावरण का संरक्षण प्रगति में बाधक सामाजिक व्यवधान को समाप्त करना, छोटे परिवार का मानक अपनाना, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना तथा विकसित करना।

इसमें, प्राकृतिक पर्यावरण की जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और अन्य जीव है, उनकी रक्षा एवं संवर्धन करें तथा प्राणीमात्र के प्रति दयाभाव रखें।

इस प्रकार कुछ केन्द्रित घटकों को विद्यालयी पाठ्यचर्या में समुचित रूप से समाविष्ट करना आवश्यक हैं। प्रयत्न यह है कि इस प्रकार के घटक राष्ट्रीय भागीदारी की दृष्टि और मूल्यों को उत्पन्न करने में सहायक हों।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 1986–

की रूपरेखा में महात्मा गांधी ने कहा, ''सच्ची शिक्षा छात्र–छात्राओं के अन्दर सर्वोत्तम सृजनशीलता का विकास करती हैं विद्यार्थियों के मन, मस्तिष्क में अव्यवस्थित और अवांच्छित सूचना

भर देने मात्र से ऐसा कभी नहीं हो सकता हैं। यह सब ऐसा निष्प्राण भारी बोझ बन जाता हैं जो उनकी समग्र मौलिकता को कुचल देता है। उन्हें महज यंत्रवत बना देता हैं।''

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 1988–

की रूपरेखा के अन्तर्गत सामाजिक विज्ञान का अध्ययन विद्यार्थियों को ऐसे जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनाने में सहयोगी सिद्ध होता है, जो राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया मे अपना अधिक सहयोग दे सकते हैं। सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन का सर्वप्रथम लक्ष्य विद्यार्थियों को अपने भौगोलिक और सामाजिक परिवेश के अतीत और वर्तमान का ज्ञान कराना हैं। सामाजिक विज्ञानों के शिक्षण के प्रभावकारी कार्यक्रमों द्वारा बच्चों में सामाजिक, आर्थिक, तथा राजनैतिक संस्थाओं के माध्यम से होने वाली जनजीवन संबंधी सामाजिक मूल्यों और दृष्टिकोणों के प्रति अन्तर्दृष्टि के विकास में सहायक होना चाहिए। यह कल के उभरते नागरिकों का समाज, राज्य, राष्ट्र और व्यापक रूप से विश्व के क्रियाकलापों में प्रभावशाली भूमिका के लिए अनिवार्य हैं।

सामाजिक विज्ञान के शिक्षण से बच्चों को भारत की सांस्कृतिक संपदा की पहचान कराने तथा अवांछित रूढ़ीयों से मुक्ति दिलाने में विशेषतः सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में समर्थ होने चाहिए। यह विद्यालयों का उत्तरदायित्व है कि वे हमारे विद्यार्थियों में संकीर्ण भावना को मिटा सके तथा ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि प्रत्येक विद्यार्थी में सामाजिक तथा आर्थिक पुननिर्माण के महत्वपूर्ण कार्य में प्रतिबद्धता के साथ भाग लेने की भावना का विकास हो। विश्व की जातियों में सहनशीलता और क्षमता तथा शान्ति और

आन्तरिक संगीत की भावना को उत्पन्न करने के अपने राष्ट्रीय लक्ष्य के प्रति भी बच्चों में आस्था उत्पन्न होनी चाहिए। अतः सामाजिक विज्ञान के शिक्षण का उद्देश्य मानवतावाद, धर्म निरपेक्षता, समाजवाद और जनतंत्र के मूल्यों और आदर्शों का प्रसार होना चाहिए। इससे न्यायपूर्ण विश्व व्यवस्था आर्थिक और सामाजिक मूल्यों की वृद्धि, हिंसा के शमन और भौगोलिक निर्भरता की वृद्धि के प्रमुख मूल्यों को प्राप्त करने के लिए अनिवार्य ज्ञान तथा दृष्टिकोण विकसित होना चाहिए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 1988 में इस योजना का अनुसरण किया गया और सामाजिक विज्ञान का उद्देश्य विद्यार्थियों को ज्ञान से सज्जित कर उनमें अभिरूचि उत्पन्न करके समाज में विभिन्न भूमिका के काम करने के लिए तैयार करता है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् 2000 में सामाजिक विज्ञान का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है ऐसा बताया गया है। परम्परागत रूप से विद्यालय में सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम में इतिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र विषय शामिल किए जाते थे क्योंकि उन्हें मानव समाज के विकास का देशकाल और एक दूसरे के संबंध में विभिन्न आयामों से अध्ययन करा पाने में आधारभूत सामग्री समझा जाता था। धीरे-धीरे अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र के संघटकों को भी शामिल कर लिया गया। सामाजिक विज्ञान का अध्यापन विद्यालयी शिक्षा के प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर सामान्य शिक्षा के एक संघटक के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इससे मानव परिवेश को पूरी तरह से समझने और अपेक्षाकृत व्यापाक परिप्रेक्ष्य में करने में मदद मिलती है।

"The main aim of social studies is to present social structure and social process to children and thus to prepare them for social change." - N.C.E.R.T.

साधनः (त्यागी, गुरूसरनदास–सामाजिक अध्ययन का शिक्षण)

1. अच्छी नागरिकता,
2. सामाजिक चरित्र का विकास,
3. सामाजिक विरासत तथा समस्याओं का ज्ञान,
4. वर्तमान को स्पष्ट करना,
5. विभिन्न वृत्तियों तथा कौशलों का विकास,
6. अपनेपन की भावना का विकास,
7. परस्परावलम्बन की भावना का विकास,
8. अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास,
9. वातावरण का ज्ञान।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005–

ज्ञान के पुष्टिकरण व औचित्य को स्थापित करने की प्रक्रिया में जिन अवधारणाओं व अर्थो का उपयोग किया जाता है, उनके आधार पर भी ज्ञान का वर्गीकरण किया जा सकता हैं प्रत्येक का अपना 'अलोचनात्मक चिन्तन' ज्ञान को जाँचने व उसकी पुष्टि करने का तरीका और अपने प्रकार की रचनात्मकता होती है।

सामाजिक विज्ञानों तथा मानविकी की अपनी अवधारणाएँ होती है, उदाहरण के लिए समुदाय, आधुनिकता, संस्कृति, अस्मिता और राजनीति। सामाजिक विज्ञानों का लक्ष्य मनुष्यों और समाज में

मौजूद मानव समूहों की एक सामान्य और समीक्षात्मक समझ विकसित करना हैं। सामाजिक विज्ञानों का सरोकार सामाजिक संसार के विवरण, उसकी व्याख्या और उसके बारे में पूर्वानुमान लगाने से है। सामाजिक विज्ञानों की प्राक्कल्पना सामूहिक जीवन में मानव व्यवहार के बारे में होती हैं और उनकी वैधता अंततः समाज में किये गए अवलोकन पर भी निर्भर करती है। ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में विज्ञान और सामाजिक विज्ञान लगभग एक समान होते हैं लेकिन उनमें दो भेद भी है, जो पाठ्यचर्चा की योजना बनाने के लिए बहुत ही प्रासंगिक है। प्रथम सामाजिक विज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करते हैं जिसका आधार तक्र होता है जबकि विज्ञान 'कारण–प्रभाव' के आधार पर काम करता है। दूसरे, सामाजिक विज्ञान के निष्कर्ष बहुदा नैतिकता और वांछनीयता के सवाल उठाते है जबकि प्राकृतिक घटनाऐं समझी जाती है, उनपर नैतिकता के सवाल तभी उठाये जाते है जब वे मानव के कार्य व्यवहार में शामिल हो जाती है।

सामाजिक अध्ययन के विभिन्न विषयों में से भूगोल विषय की शाखा को चयनित किया जा रहा है। भूगोल एक व्यावहारिक विषय है, और मानवीय जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है, तथा इसकी सभी उपशाखा अपना स्वअस्तित्व का निर्माण करने लगे हैं।

अपने व्यक्तिगत अनुभव, रूचि के आधार पर तथा विद्यार्थियों का इस विषय में कठिनाई अनुभव को ज्ञात करना इसके अध्ययन हेतु उत्प्रेरित करता है।

अतः भूगोल के चयन उपरान्त इस विषय की शाखा में विषय बिन्दू अध्ययन का मुख्य केन्द्र रूप में चयनित किया जाएगा।

1.2 भूगोल (Geography)

"भूगोल एक ऐसा विषय है, जिसका लक्ष्य नैतिक व वैयाक्तिक गुणों का विकास करना हैं।" – **पिचमेल**

"भूगोल पृथ्वीतल और पृथ्वी पर रहनेवाले निवासियों का विज्ञान है।" (Geography is the science of the surfaces of the earth & its inhabitants)" –**शब्दकोष**

"भूगोल पृथ्वी तल का, उसकी क्षेत्रीय भिन्नता के साथ मानवीय निवास के रूप में अध्ययन है।" – **मोंकहाऊस**

आज का भूगोल हजारों वर्षो से संचित ज्ञान का परिणाम है। प्रारंभ में भूगोल का जन्म यात्राओं से हुआ। भूगोल एक सजीव, सक्रिय और प्रगतिशील विज्ञान है।

शाब्दिक अर्थ के आधार पर भूगोल = भू+गोल; अर्थात् 'गोल–पृथ्वी'। अंग्रेजी भाषा में भूगोल का पर्यायवाची शब्द 'ज्योग्राफी' (Geography) है। ज्योग्राफी शब्द युनानी भाषा के 'जी' (Ge) तथा 'ग्राफो' (Grapho) शब्दों से मिलकर बना है। 'जी' का अर्थ है पृथ्वी और 'ग्राफो' का अर्थ है वर्णन करना है। इस प्रकार ज्योग्राफी का सामान्य अर्थ है–'पृथ्वी का वर्णन करना।'

भूगोल केवल पृथ्वी का वर्णन ही नहीं करता वरन् भूगोल पृथ्वी का वर्णन मानव के संदर्भ में भी करता है। अत एवं 'भूगोल' मानव व उसके साथ अन्तसंबंध का अध्ययन है।

1.3 भूगोल विषय की शाखाऐं –

आज भूगोल रूपी वट वृक्ष की अनेक शाखाएँ हो गई है। इनमें कुछ प्रमुख रूप से निम्न है–

1. प्राकृतिक भूगोल (physical Geography)
2. मानव भूगोल (Human Geography)
3. आर्थिक भूगोल (Economic Geography)
4. ऐतिहासिक भूगोल (Historical Geography)
5. राजनीतिक भूगोल (Political Geography)
6. प्रादेशिक भूगोल (Regional Geography)
7. मानचित्र विज्ञान/भूगोल (Map Geography)
8. वनस्पति भूगोल (Ecology of plant Geography)
9. सामाजिक भूगोल (Social- Geography)
10. भूमि–उपयोजन भूगोल (Land-use Geography)
11. शहरी भूगोल (Urban Geography)
12. बाजारी भूगोल (Marketing Geography)
13. चिकित्सा भूगोल (Medical Geography)

भूगोल की विभिन्न शाखाओं अथवा विभिन्न क्षेत्र का शिक्षण करने हेतु कुछ शिक्षण विधियाँ है। भूगोल एक ऐसा विषय है जिसमें कई विषय सामाविष्ट है, अथवा यह कह ले कि भूगोल का अनेक विषयों में हस्तक्षेप है।

अतः इसके शिक्षण विधियों में इसका पुट है। विभिन्न विषय-बिन्दु हेतु भिन्न शिक्षण विधि का चयन कर सकते हैं। अब यह शिक्षक पर निर्भर है कि वे शिक्षण हेतु किस विधि का चुनाव करते हैं, तथा अपने शिक्षण के उद्देश्य को पूर्ण रूप से प्राप्त करते हैं। समय, संसाधन की उपलब्धता तथा शिक्षक की विषय व विधियों पर पकड़ शिक्षण विधियों के चयन में तथा सफलता हेतु महत्वपूर्ण होती है।

1.4 भूगोल शिक्षण की विधियाँ-

भूगोल का पाठ्यक्रम विभिन्न विषयों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भूगोल, प्राकृतिक विज्ञान और मानवशास्त्र दोनों के बीच की कड़ी है। पाठ्यक्रम के अन्य विषयों की भाँति भी कुछ निश्चित उद्देश्यों और लक्ष्यों को ध्यान में रखकर पढ़ाया जाता है। किसी भी विषय के पढ़ाने के उद्देश्य ही उसकी शिक्षण विधियों को निर्धारित करते है क्योंकि उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उचित प्रकार की पाठन विधियों का होना आवश्यक है।

भूगोल के अर्थ ज्ञान एवं उसकी विषय-वस्तु के विकास के साथ-साथ भूगोल की शिक्षण विधियाँ भी बदलती गई। विद्यालय के पाठ्यक्रम में भूगोल के अतिरिक्त संभवतः दूसरा कोई ऐसा विषय नहीं हैं, जो इतनी विभिन्न पद्धतियों से पढ़ाया जाता है। भूगोल शिक्षक को केवल पाठ्यसामग्री का ही केवल समुचित ज्ञान नहीं, वरन् उस शिक्षा का भी स्पष्ट ज्ञान होना आवश्यक है। भूगोल शिक्षा हर स्तर पर किस विधि के माध्यम से पढ़ाना है इसका ज्ञान होना नितान्त आवश्यक है। उसे शिक्षण विधियों को निश्चित करने में बालकों की आयु, पाठ्यवस्तु की प्रकृति उनकी रूचि एवं उनकी

योग्यता का ध्यान रखना अति आवश्यक भी है। भूगोल की शिक्षण विधि एक मिश्रित विधि है।

भूगोल की कुछ प्रमुख विधियाँ इस प्रकार से है–

1. निरीक्षण या प्रेक्षण विधि (Observation Method)
2. वर्णनात्मक विधि (Discriptive Method)
3. भ्रमणात्मक विधि (Excursion Method)
4. प्रादेशिक विधि (Regional Method)
5. तुलनात्मक विधि (Comparative Method)
6. आगमन विधि (Inductive Method)
7. निगमन विधि (Deductive Method)
8. विचार–विमर्श विधि (Discussion Method)
9. पाठ्यपुस्तक विधि (Text- Book Method)
10. योजना विधि (Project Method)
11. समस्या विधि (Problem Method)
12. प्रयोगशाला विधि या वैज्ञानिक विधि (Laboratory or Scientific Method)

1.5 मानचित्र कला (Cartography)–

आधुनिक युग में मनुष्य के लिए भूगोल विषय में मानचित्र का ज्ञान अति आवश्यक है। मानचित्र विश्व के भौगोलिक ज्ञान प्राप्ती के सर्वोत्तम साधन है। मानचित्र के द्वारा हम पृथ्वी अथवा उसके किसी भाग को समतल धरातल पर चित्रित करते हैं और पृथ्वी पर

निवास करने वाले मानव और उसके क्रिया-कलापों का समन्वित अध्ययन करते हैं।

"A map is the beginning of the adventure, travel and treasure hent, wars and explorations all open with its unrolling. Even in your arm chair, a map is magic carpet, taking a mind in a flash what where you want to go." **-C.P.Donald.**

मानचित्र कला के अन्तर्गत मानचित्र तैयार करने के वे सभी प्रक्रम है, जिसमें भूमि-सर्वेक्षण से लेकर मानचित्र मुद्रण तक क्रियाएँ सम्पन्न होती है, अर्थात् मानचित्र कला मानचित्र व चार्टो को तैयार करने की एक कला है।

मानचित्र शब्द लैटिन भाषा के शब्द 'मेपा' (Mappa) का रूपान्तर जिसका अर्थ ढ़कने का कपड़ा तथा कपड़े का रूमाल होता हैं। अंग्रेजी भाषा में इसे 'मैप' (Map) कहा जाता है। 1940 ई.में विश्व के मानचित्र के लिए एक विद्वान मिकन ने मापामुण्डी (Mappamundi) शब्द का प्रयोग किया था। वहीं शब्द 'मापा (Mappa) मानचित्र (Map) के रूप में प्रचलित हो गया।

भारत में वस्तुतः मानचित्र नाम का शब्द संस्कृत में नहीं मिलता, केवल चित्र शब्द का ही प्रयोग हुआ है जो बहुअर्थी है। वर्तमान मानचित्र शब्द तो आधुनिक युग में उर्दू के शब्द के पर्याय के रूप में प्रयुक्त हुआ।

''मानचित्र कला में धरातल के वास्तविक सर्वेक्षण में मानचित्र मुद्रण तक मानचित्र के प्रक्रमों की संपूर्ण श्रृंखला सम्मिलित होती है।'' **-एफ.जे. मॉकहऊॅस**

1.6 मानचित्र के प्रकार –

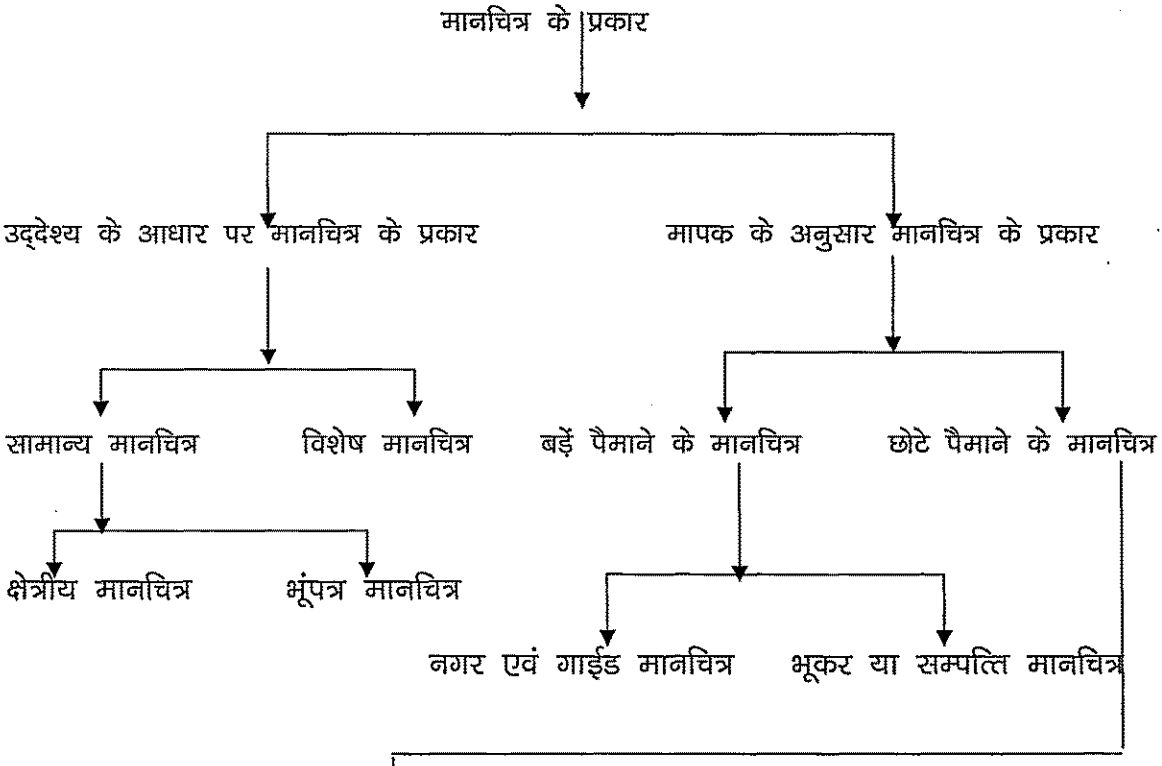

1. भौतिक मानचित्र
2. राजनीतिक मानचित्र
3. भू–गर्भिक मानचित्र
4. भू–आकृतिक मानचित्र
5. ऋतु मानचित्र
6. सामुद्रिक मानचित्र
7. वायुमार्ग मानचित्र
8. सांख्यिकी या विवरण मानचित्र

गुणप्रधान वितरण मानचित्र
1. मिश्रित 2. प्रभुत्व 3. रंग विधि
4. चिन्ह विधि, 5. नामांकन विधि

मात्रा प्रधान वितरण मानचित्र
1. समान रेखा विधि
2. वर्णमापी या छाया विधि
3. बिन्दु विधि
4. चित्रीय मानचित्र

1.7 मानचित्र की उपयोगिता–

केवल भूगोल से संबंधित व्यक्तियों के लिए ही नहीं वरन् जनसाधरण तथा सरकार के लिए भी मानचित्र उपयोगी होते है। विभिन्न प्रांतों की सीमायें, जिले व्यक्तिगत, सम्पत्तियों के विस्तार, यातायात एवं आवागमन मार्गो के विस्तार आदि को जानने एवं उनको विकसित करने के लिए मानचित्र परम उपयोगी होते है। सैनिकों के लिए युद्ध हेतु, विभिन्न भागों की भौतिक दशा, रक्षा के हेतु आई, धरातल के ढाँल, गाँव, वन, जलप्राप्ती के साधनों आदि का ज्ञान कराने के लिए मानचित्र अत्यंत लाभदायक सिद्ध होते हैं। यात्रियों, व्यापारियों, अनुसंधानकर्ताओं, भूगोल वेत्ताओं, भूगर्भ वेत्ताओं आदि के लिए पृथ्वी के विभिन्न स्थलों की समस्त मानवीय एवं प्राकृतिक परिस्थितियों का ज्ञान प्राप्त करने में भी मानचित्र सहायक होते हैं।

1.8 भूगोल में मानचित्र का स्थान –

भूगोल में मानचित्र का वही स्थान है जो मानव शरीर में प्राण का है। भूगोल तथा मानचित्र एक दूसरे से अत्याज्य है। यही कारण है कि मानचित्र व भूगोल एक सिक्के के दो पहलू है। दोनों का विकास साथ ही साथ हुआ। भूगोल का सारा ज्ञान मानचित्र में विद्यमान है।

आधुनिक युग में मानचित्रों का प्रयोग अत्यधिक बढ़ गया है–

- किसी स्थान की संबंधित दूरी ज्ञात करना।
- किसी स्थान की भौतिक एवं सांस्कृतिक जानकारी ज्ञात करना।
- जलवायु के अध्ययन में सहायक।

- प्राकृतिक मानचित्र के आधार पर धरातल का बनावट से भी परिचय हो जाता है। जिससे सड़कों, मानव विकास आदि कार्यों में मदद मिलती है।
- वितरण मानचित्रों के आधार पर दैनिक जीवन में मद्द मिलती है।
- विश्व के किसी भी कोने का अल्प समय में ही ज्ञान संभव।

मानचित्र के उपर्युक्त लाभ तब प्राप्त हो सकते हैं जबकि मानचित्र की मुलभूत अवधारणाओं का ज्ञान हो।

1.9 मानचित्र की भाषा–

मानचित्र, मानचित्र की भाषा में ही लिखे जाते है। यह भाषा कुछ संकेतों की है, जिसे भूगोल के विद्यार्थियों को जानना बहुत ही जरूरी है। यह संकेत (Symbols) ही विभिन्न भौतिक (Physcial) दिशाओं, पर्वत, पठार, नदियों, ढाल, घाटियों आदि को प्रकट करते है तथा सांस्कृतिक (Caltural), मनुष्य के निवास की दशाएँ, बसाव के प्रकार, नगर, सड़के, रेलमार्ग आदि प्रकट करते है।

यह संकेत कुछ तो अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत है और कुछ संकेत एक मानचित्र से दूसरे मानचित्र में बदल सकते है। अतः प्रत्येक मानचित्र में उसके संकेत नीचे सूची के रूप में दिये रहते हैं। इन संकेतों से लाभ यह है कि मानचित्र में स्थान के अभाव में भी सभी कुछ लिखा जा सकता है। दूसरा समय की भी बचत हो जाती है।

1.10 मानचित्र शिक्षण के उद्देश्य–

भूगोल अथवा सामाजिक अध्ययन का शिक्षक जब मानचित्र पढ़ाता है तो उसे यह स्पष्ट होना चाहिए कि वह मानचित्र का शिक्षण क्यों कराना चाहते है? जैसा कि भूगोल शिक्षण के उद्देश्यों के समय लिखा गया है कि भूगोल शिक्षण के प्रमुख उद्देश्यों छात्रों में भौगोलिक ज्ञान, ज्ञानोपयोग तथा विविध कौशलों का विकास कराना है। मानचित्र शिक्षण में विशेष रूप से कौशल के उद्देश्य की पूर्ति होती है। पुनश्च, मानचित्र–शिक्षण के प्रमुख रूप से निम्न उद्देश्य है–

- मानचित्रों का अनुस्थापन (Orient) करने की क्षमता एवं दिशाओं को समझने का ज्ञान छात्रों में विकसित हो जाए।

  उदाहरण– छात्र एक स्कूल, सड़क, नदी, आदि के संकेतों को समझे।

- छात्रों में यह क्षमता पैदा करना कि वे जिस प्रदेश के मानचित्र का अध्ययन कर रहे हो, उसमें दिये गये संकेतों (Symbols) के आधार पर भौगोलिक ज्ञान को पढ़ सके, तथा किसी स्थान की ऊँचाई रंगों, कन्दूर आदि के आधार पर उस क्षेत्र की सही कल्पना कर सकें।

- प्रायः विभिन्न उद्देश्यों के लिए विभिन्न प्रकार के मानचित्रों का प्रयोग होता है। छात्रों को इस योग्य बना दिया जाए कि वह कम से कम भूगोल विषय में अध्यापन–अध्ययन तथा पाठ्यपुस्तक में प्रयोग किए जाने वाले मानचित्रों को समझ सकें।

  उदाहरण– ऋतुमानचित्र, धरातलपत्रक आदि।

- विद्यार्थियों को इस योग्य बनाया जाए कि आवश्यकता पड़ने पर दुनिया के किसी प्रदेश के, किसी भी अन्य प्रदेश के मानचित्र के आधार पर, प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक तुलना कर सकें तथा उसके आधार पर निष्कर्ष निकाल सकें।

- पुनश्च जो ज्ञान उन्होनें अर्जित किया है, उसे मानचित्र पर अंकित करने की क्षमता हो जाए।

- मानचित्र पर मापक (Scale) को समझ सकें। छात्रों को यह सिखाना कि कौनसा मानचित्र किस मानचित्र पर बना हुआ है।

  उदाहरण– 1 से.मी. = 1 मील, अथवा 1:63360

- यह क्षमता उत्पन्न हो जाए कि अक्षांश और देशान्तर के आधार पर किसी भी स्थान की दूरी कितनी है, छात्र यह समझ ले।

- मानचित्र के अध्ययन के आधार पर छात्र तक्र आदि से निष्कर्ष निकाल सकें।

भूगोल एक व्यवहारिक विषय है जो कि केवल अध्ययन तक ही सीमित नहीं है। छोटी–छोटी बातों में उसे हम अपने जीवन के हर पक्ष में देख सकते हैं।

अपने छात्र जीवन के समय में मानचित्र अध्ययन में मैनें कई कठिनाईयों का अनुभव किया। जो मुझे अभी तक विचलित करती रही है। आज शिक्षक के पद दृष्टि से विद्यार्थियों को उन्हीं समस्याओं का सामना करते देखता हूँ तथा विद्यार्थी इस वजह से अन्य अध्याय में भी कठिनाईयों का सामना करते हैं।

भूगोल की परीक्षा में अंकों की उपलब्धि में मानचित्र महत्वपूर्ण होता है, किन्तु विद्यार्थी मानचित्र पठन तथा अंकन में अत्याधिक समय लगाते है तथा भ्रमित रहते हैं। इन सारे तथ्यों ने एक चित्र का निर्माण कर दिया जो एम.एड. करते वक्त शोध प्रबंध हेतु विषय बिन्दु का चयन करने में सहायक हुआ। मानचित्र के विस्तृत क्षेत्र में कक्षा नववीं के विद्यार्थियों के स्तर पर कठिनाईयों का समांकलन कर विषय बिन्दु को चयनित किया गया।

1.11 अध्ययन का कथन –

"कक्षा नववीं के भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणाओं का उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।"

1.12 अध्ययन की आवश्यकता–

आज शालेय स्तर पर देखा जाय तो कई विद्यार्थियों को भूगोल विषय पढ़ते वक्त अनेक समस्याऐं आती है। यह देखा जाता है कि इसके कई कारण हो सकते हैं, उसमें देखा जाये तो पाठ्यक्रम में अनेक संकल्पनाएँ तथा अवधारणाऐं नयी होती है। शिक्षक कई बार इन संकल्पना तथा अवधारणाओं को सिर्फ पाठ्यक्रम के हिसाब से ही पढ़ाते हैं। तो इससे वह संकल्पना विद्यार्थियों में पूर्णतः रूप से स्थापित नहीं होती है।

भूगोल विषय में मानचित्र को अमूल्य महत्व दिया गया है क्योंकि भूगोल याने पृथ्वी का वर्णन भी होता है। पृथ्वी का अनेक क्षेत्रों में मानचित्र बनाकर विभाजन किया गया है। मानचित्र में ही उसी क्षेत्र के बारे में पुरी जानकारी होती है। कक्षा में शिक्षक मानचित्र पाठ्यक्रम के हिसाब से दिया गया जो मानचित्र है उसका

लक्षण पढ़ाते है। इसकी वजह से हर बदलती कक्षा में वही मानचित्र शिक्षक को पढ़ाना पड़ता है।

मानचित्र के लक्षण पढ़ाने के बदले मानचित्र की जो मूलभूत अवधारणाएँ होती है वह अगर सही तरीके से, सही ढंग से पढ़ाई जाये तो हर बदलती कक्षा में मानचित्र पढ़ाने में ज्यादा समस्याएँ नहीं आयेगी। समय की बचत होगी और मानचित्र कि मूलभूत अवधारणाएँ अगर विद्यार्थियों में सही प्रकार से स्थापित हो गयी तो विद्यार्थी अपने पुराने ज्ञान का और मानचित्र अवधारणाओं के ज्ञान से वह कोई भी मानचित्र अच्छी तरीके से अध्ययन करके पढ़ सकते हैं।

शिक्षा में भूगोल विषय को बहुत महत्व है। भूगोल विषय का पाठ्यांश पूर्णतः मानवीय जीवन, विविध क्रिया–कलाप, एवं क्रिया–प्रक्रियाओं पर आधारित है। भूगोल विषय में इस क्रिया–कलापों, क्रियाओं तथा उत्पाज की विविध जानकारी संक्षिप्त रूप में मानचित्र के द्वारा दी जाती है।

आज शिक्षक समय की कमी तथा बढ़ा हुआ पाठ्यांश को देखते हुए भूगोल विषय बिना कृति तथा बीना तकनीके इस्तेमाल करते हुए सिर्फ पाठ्यांश के हिसाब से पढ़ाते हैं। भूगोल विषय में मानचित्र एक अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है। लेकिन आज हर शिक्षक कक्षा में सिर्फ पाठ्यांश को देखते हुए मानचित्र को केवल कक्षा तथा पाठ्यांश के हिसाब से पढ़ाते है। इससे छात्र केवल मानचित्र को परीक्षा के दृष्टि से देखते है और परीक्षा में भी सिर्फ पठन के तौर पर लिखते हैं और बढ़ती नई कक्षा में फिर से भूल जाते हैं।

इसलिए मनचित्र पढ़ाते वक्त केवल उसका लक्षण पढ़ाने के बजाय मानचित्र की मूलभूत अवधारणाओं को पढ़ाया जाना जरूरी है।

तथा और कुछ नई तकनीके इस्तेमाल करके मानचित्र पढ़ाना चाहिए। क्योंकि एक बार अगर विद्यार्थी मानचित्र की मूलभूत अवधारणायें सिख गये तो वह उसका उपयोग करके दूसरे कोई भी मानचित्र पढ़ सकते हैं।

1.13 अध्ययन के उद्देश्य–

इस अध्ययन के उद्देश्य निम्नांकित है–

1. भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणा 'शीर्षक तथा उपशीर्षक संबंधी ज्ञान' का उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणा 'अक्षांश–देशान्तर संबंधी ज्ञान' का उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणा 'मापनी संबंधी ज्ञान' का उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणा 'दिशा संबंधी ज्ञान' का उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
5. भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणा 'रूढ़ चिन्हं एवं खुणा संबंधी ज्ञान' का उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
6. भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणा 'सूची संबंधी ज्ञान' का उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
7. भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन की 'मूलभूत अवधारणाओं संबंधी ज्ञान' का उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

1.14 अध्ययन की परिकल्पनाएँ –

इस अध्ययन की निम्नांकित परिकल्पनाएँ है–

1. भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणा 'शीर्षक तथा उपशीर्षक संबंधी ज्ञान' का उपलब्धि पर प्रभाव नहीं होगा।
2. भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणा 'अक्षांश–देशांतर से संबंधी ज्ञान' का उपलब्धि पर प्रभाव नहीं होगा।
3. भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणा 'मापनी संबंधी ज्ञान' का उपलब्धि पर प्रभाव नहीं होगा।
4. भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणा 'दिशा संबंधी ज्ञान' का उपलब्धि पर प्रभाव नहीं होगा।
5. भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणा 'रूढ़ चिन्हं एवं खूणा संबंधी ज्ञान' का उपलब्धि पर प्रभाव नहीं होगा।
6. भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन की मूलभूत अवधारणा 'सूची संबंधी ज्ञान' का उपलब्धि पर प्रभाव नहीं होगा।
7. भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन की 'मूलभूत अवधारणाओं संबंधी ज्ञान' का उपलब्धि पर प्रभाव नहीं होगा।

1.15 चरों की व्यवहारिक व्याख्या–

मानचित्र–

''पृथ्वी अथवा उसके किसी भाग कि प्रकृति एवं वितरण का दिक्काल निश्चित मापक पर सुव्यवस्थित रूप से चित्रित किया हुआ स्वरूप मानचित्र कहलाता है।''

अवधारणा –

- ऑसगुड़ (1933) तथा गारूस (1969) के अनुसार "अवधारणाएँ वह मध्यस्थ प्रतिक्रियाएँ है, जो किन्हीं परिस्थितियों, वस्तुओं या कार्यो में एक सादृश्य तत्वों वाले उद्दिपक के प्रति होती है या एक सादृश्य प्रत्यय परक समूह में प्रतीत होती है।"
- "अध्ययन में मानचित्र पठन की जो शीर्षक–उपशीर्षक, अक्षांश–देशान्तर, मापनी, दिशा, रूढ़ चिन्हं एवं खुणा एवं सूची से संबंध है, वह अवधारणाएँ होगी।"

उपलब्धि –

"उपलब्धि का यहॉ अर्थ है, मानचित्र पाठ्यांश विषय संबंधित परीक्षणों के प्रति प्राप्त गुणों से हैं।"

1.16 शोध की सीमाएँ–

शोध से संबंधित निम्नांकित सीमाएँ है–

1. प्रस्तुत शोध में अहमदनगर (महाराष्ट्र राज्य) के जिले के केवल एक ही निजी विद्यालय का चुनाव किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध में केवल नववीं कक्षा के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध में कक्षा नववीं के सामाजिक अध्ययन के अंतर्गत भूगोल विषय के केवल मानचित्र की मूलभूत अवधारणाओं को ही अध्ययन हेतु चुना गया है।
4. इस अध्ययन में जो प्रतिदर्श लिया जाएगा वह कुछ मात्रा में समकक्ष न होने की संभावना हो गयी है।